परास्नातक

माइनर/ वैकल्पिक प्रश्न-पत्र

अधिकतम अंक 100

संस्कृत

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन का मूल उद्देश्य है -

- संस्कृत काव्यजगत् के सर्वोत्कृष्ट कवि कालिदासकृत 'मेघदूत' में अवगाहन कराकर उनकी अनुपम भाषाशैली एवं अपूर्व काव्यसौन्दर्य का रसास्वादन कराना।
- महाकवि कालिदासकृत 'मेघदूत' के अध्ययन एवं अनुशीलन के माध्यम से गीतिकाव्य के स्वरूप एवं विशेषताओं से अवगत कराना।
- महाकवि भर्तृहरिकृत 'नीतिशतकम्' के अनुशीलन के माध्यम से कवि के नीतिसम्बन्धी विचारों से अवगत कराना।
- विद्यार्थियों को स्वर सन्धि एवं कारक सम्बन्धी ज्ञान करा कर भाषिक निपुणता प्रदान करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	मेघदूतम् (पूर्व मेघ - प्रथम 30 श्लोक)		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा सस्वर वाचन
2	नीतिशतकम् (प्रथम 30 श्लोक)		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा सस्वर वाचन
3	स्वर सन्धि प्रकरण (लघुसिद्धान्त कौमुदी)		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
4	विभक्त्यर्थ प्रकरण (लघुसिद्धान्त कौमुदी)		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र -

- गीतिकाव्यों में सन्निहित गेयात्मकता से सम्यग्रूप से अवगत होंगे।
- 'मेघदूत' में चित्रित वाह्य प्रकृति में मानवीय संवेदना की संक्रान्ति से जन्य लोकोन्तर आनन्द की अनुभूति में सफल होंगे।
- स्वर सन्धि एवं कारकों का अध्ययन करके संस्कृत शब्दों एवं वाक्यों की रचना करने में दक्ष होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. मेघदूतम्, कालिदास (व्या0) डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015
2. मेघदूतम्, कालिदास (व्या0) आचार्य शेषराज रेग्मी, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2016
3. नीतिशतकम्, भर्तृहरि (व्या0) सावित्री गुप्ता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2008
4. नीतिशतकम्, भर्तृहरि (व्या0) राकेश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2003
5. लघुसिद्धान्त कौमुदी, (आचार्य वरदराज), डॉ0 आद्या प्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
6. लघुसिद्धान्त कौमुदी, (आचार्य वरदराज), डॉ0 उमेशचन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा प्रकाशन

अधिन्यास कार्य -

1. पूर्वमेघ के प्रथम पन्द्रह श्लोकों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

नीतिशतकम् के प्रथम पन्द्रह श्लोकों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।